

स्पतेः 9,33,6. — 22) pass. (6te Kl. med.?) des einfachen Stammes: a) *fest sein, sich ruhig verhalten, stillhalten, verbleiben, sich erhalten, bestehen*: मा धृयाः शयने स्वे AV. 3,25,1. ये अस्या आचरणेषु दधिरे समुद्रे न अवेस्यवः RV. 1,48,3. शक्राय दधे (पृथिवी) वयभाय वृक्षे AV. 12,1,37. धियतो गर्भः 6,17,1. 9,1,11. 12,3,35. इन्द्राय धियस्व TBr. 2,6,3. देवानां सवनानि नाधियत Ait. Br. 2,23. अन्यदन्यदस्यान्नाद्यं गृहेषु धियते *verbleibt, ist vorhanden* 3,2. इदं सर्वं धियते *hält sich still* Çat. Br. 8,4, 1,12. अयसि हेव धियते *bleibt stehen bei dem Besten* 2,2,4,9. यदेत एतत्पश्चेवाधियत 3,4,22,1,4,27. दुर्गे चन धियते विश्व आ पुरु जनः *kann standhalten* RV. 5,34,7. — सुरतश्मसमेतो मुखे धियते स्वेदन्तोद्गो ऽपि ते Ragh. 8,50. धियते कुसुमप्रसादनम् KUM'RAS. 4,18. Häufig so v. a. *am Leben sein, fortleben, am Leben bleiben*: दिष्ट्या धियते पार्था कि MBh. 1,7453. 8383. 3,3042. 16845. 16871. R. 5,14,66. 36,14. 16. 6,5,8. MRK'KH. 12,22. 172. 16. M'ARK. P. 24,8. धियमाणे तु पितरि M. 3,220. MBh. 4,603. Bu'ig. P. 4,3,1. यावद्धरिण्यते MBh. 3,16835. कश्चित्कुरुप्रवीरस्य धियति पुत्राः 1,7173. यथा धियेदपत्यं मे तथा कुरु HARIV. 9693. धरिष्यति. धरिष्यति in der Bed. *bestehen, dauern, fortleben*, auch da wo das med. dem Versmaass eben so gut entsprochen hätte: यावह्योक्ता धरिष्यति R. GORR. 1,62,30 (SCHL. 60,28 falschlich धा-). यावदूर्ध्वरिष्यति MBh. 3,16580. R. 6,81,22. 112,102. यावच्च मे धरिष्यति प्राणा देहे MBh. 3,2222. R. GORR. 1,23,5. त्रीत्रिष्यति चिरं मीता यदि मासं धरिष्यति 5,67,10. Vgl. u. 4. — b) *sich anschicken, unternehmen, be-ginnen*; mit dat. oder acc. der Sache oder mit inf.: वदिष्याम्येवाकृमिति वापद्दे Çat. Br. 14,4,3,30. स्वयं वैव दधिरे 1,6,2,3. त्वष्टा पोषाय धियताम् AV. 6,141,1. ते पुनर्दानायाधियत Çat. Br. 14,4,3,7. संलययिव धियते 14,7,4,19. तदनुमाधियत 10,6,5,5. 6. 2,2,1. 4,2,18. KH'ND. Up. 4,10,3. अन्तरमेव सुत्या धियामहे Çat. Br. 3,5,4,15. 14,4,3,31. समानं वदतः समानं दधाणाः 3,4,2,14. 6,2,22. धृत *der sich zu etwas (loc. dat.) anschickt, sich an etwas macht, bereit zu, fest entschlossen zu*: तस्माद्दत्तं त्वं श्रवणे धृता ऽकृम् MBh. 5,1446. 1914. पाण्डवानां ज्ञेयं धृतः 2108. सा पूर्वकौशिकी पाण्डो जगाम नियमे धृता 7,2094. R. 4,47,5. तपसे धृता MBh. 5,7342. धृतवत् *dass.*: मित्रभावाय — धृतवान् KATH'S. 12,49. — 23) धृत n. Bez. einer besonderen Art zu *fechten* HARIV. 15979. — धृ (धृ) als v. l. von नृ (नृ) DH'ITUP. 31,24.

— desid. (vom intrans. धियते) दिधरिषते P. 7,2,75. Vor. 19,7. von der caus.-Form zu *halten suchen*: तैलपात्रमिवात्मानं दिधारिषेत् Gobh. 3,5,18. Vgl. u. उद्.

— intens. *fest halten, fest tragen*: दृढ्वा चिद्या वनस्पतीन्तम्या दधृष्वीजमा RV. 5,84,3. त दृवैर्न विषि दधति *befestigen* TS. 2,3,1,2. KATH. 11,6. दधति, दधति, दधति ved. P. 7,4,65.

— अधि zu Jmd (loc.) oder irgendwohin bringen, mittheilen: इहैवाग्ने अधि धारया रयिम् VS. 27,4. इन्द्र इवेन्द्रियाण्यधि धारयामा अस्मिन् AV. 1,33,3. अक्षे मत स्रवतो धारयं वृषा इवित्रः पृथिव्यां सिरा अधि RV. 10,49,9. श्रुचिं ते वर्णमधि गोषु दोधरम् 9,103,4. SV. I, 6,2,3,9. *auf Jmd bringen*: न युष्मे मर्त्यः । अत्र्यमाधि दीधरत् RV. 8,87,19. pass.: अग्नेः प्रजाते परि यद्विद्विष्यममृतं दधे अधि मर्त्येषु AV. 19,26,1.

— अधि tragen, ertragen, widerstehen: प्राणानर्ता ऽभ्यधारयत् so v. a. *blieb am Leben* MBh. 3,16221. युध्यमानम् — ते नाभ्यधारयन् 6, III. Theil.

5063. — अधिधारित PRAB. 54,1 falsche Lesart für अधिधारित.

— अघ 1) *festsetzen, bestimmen, genau angeben; für gewiss annehmen für ausgemacht ansehen*: कथं सम्यग्दिशान्तः । तयावधारितः RIG-ATA. 3,179. एषां समत्वं यज्ञाय भिषगिभरवधार्यते Suçr. 1,54,2. अनुक्रोशात्मतां तस्य — अघधार्य MBh. 1,1749. मृतां मामवधारय 14. 1977. HARIV. 6231. R. 2,21,17. 109,21. (वाक्यम्) तत्त्वया — तत्त्वमित्यवधार्यताम् 4,6,21. 5,71,15. 16. कलित्यवधार्यताम् KATH'S. 21,124. PRAB. 84,6. Çiç. 9,22. प्रकृतिपुरुषसंगे एव सात्ताद्वन्द्वेक्षुर्वधारितः Schol. zu Kap. 1, 18. 54. BHART. 1,27. ÇANK. zu BRH. ÅR. Up. p. 239.269. तत्रैवमवधियते सोम एवान्म *feststehen* ebend. p. 130. अघधत्त *feststehend, festgesetzt, bestimmt*: वाजपेय्यूप एवावधत्तः सप्तदशारतिः ÇANKH. Br. 10,1. 12,6. 16,2. 19,8. 22,1. ÇANK. zu BRH. ÅR. Up. p. 133. Z. d. d. m. G. 7,310, N. 2. Synonym der इन्द्रियाणि (im Sām'hja) TATTVAS. 15 — 2) *vernehmen, hören, erfahren*: महावयं चावधार्य MBh. 3,11210. 3,455. VARAH. BRH. S. 49,10. PANKAT. 8,24. Bu'ig. P. 3,15,35. तेषां सताम् — ब्रह्मावधार्य 13,26. PRAB. 53,17. 93,13. वानप्रस्थस्य धर्मं ते कथयाम्यवधार्यताम् M'ARK. P. 28,23. सुमित्रा जननीमेतां लक्ष्मणास्यावधारय R. GORR. 2,101,26. अधिधारितमस्माभिः M'ARAV. 69,15. अघधत्त = श्रुत AK. 3,4,4,79. तदप्यवधत्तं मया MBh. 13,3544. — 3) *begreifen, verstehen, eine Einsicht erlangen in, sich vertraut machen mit, kennen lernen*: दिरुच्चारितं शतमप्यवधारयति Suçr. 2,161. 9. न सम्यगवधारयामि MRK'KH. 82,14. उक्तमर्थं भगवत्या न सम्यगवधारयामि PRAB. 114,11. GAUPAR. zu S'AMBUJAK. 7. श्रुतां धर्मसर्वस्वं श्रुता चैवावधार्यताम् PANKAT. III,104. KUM'ILA bei MÜLLER, SL. 87. S'AM. D. 10. 6. (पुस्तकम्) तद्वधारयिष्यामि PANKAT. 232,21. तन्मुखेन च सारतः कर्मतः शीलतश्च सकलमेव नगरमवधारय DAÇAK. in BENF. Chr. 186,8. न्यायावयुतार्थशास्त्रानुसारेण KULL. zu M. 3,135. यश्च दातुं नेच्छति कृपावनावधारितः *bekannt für seinen Geiz* ders. zu 10,113. कपालि वा स्यादय वेन्दुशेखरं न विश्वमूर्तेरवधार्यते वपुः KUM'RAS. 3,78. — 4) *bei sich denken, denken an, bedenken*: बालको ऽयमित्यवधार्य PANKAT. 218,25. 102,18. स्वस्ति विषयेभ्य इत्यवधार्यावधोरिता मधुमती PRAB. 102,18. वाक्शतमवधारयन् MBh. 8,1816. im PRĀKRIT: अज्ञातस्य भावं आधारिश्च धीरं दाव ह्येहि ÇAK. 64,10. 56,5. — 5) *mittheilen* (caus. zu 2): इतिमे वत्सराज्ञाय संदेशमवधार्य सः KATH'S. 14,7. — 6) अधिधारित mit अघादि zusammengesetzt gaṇa कृतादि zu P. 2,1,59. — Vgl. अघधार fgg.

— आ 1) *bewahren, behalten*: आत्मनः शौचमाधार्य R. 4,20,16. कृदि im Gedächtniss bewahren, behalten: सकृच्छ्रुतमयं बालः सर्वं चाधारयेद्धि KATH'S. 2,37. — 2, *hinbringen zu* (loc.): अधिधार्यो दिव्या सूर्यं दृशे set: test an den Himmel RV. 1,52,8. आ पयमान धारय रयिम्सो 9,12,9. — 3) pass. (6te Klasse?) अधिधियते P. 7,4,28. Sch. *enthalten sein in, sich befinden in, an*: अधिधियते ऽस्मिन्क्रिया इत्याधारः Kāç. zu P. 1,4,45. — Vgl. आधार fgg., आधार्य.

— न्या pass. (6te Klasse?) *ruhen auf*: न्यस्मिन्दध आ मनः RV. 8,17,13.

— उद् ist, wenn nicht Augment oder Reduplication dazwischentritt, nicht von कृ mit उद् zu unterscheiden. Wenn wir hier nur die mit Sicherheit zu धृ gehörenden Formen verzeichnen, so wollen wir damit nicht gesagt haben, dass alle zu कृ gestellten Formen wirklich zu dieser Wurzel gehören, da die Bedeutungen von उद् sowohl aus धृ als auch aus कृ abgeleitet werden können. *Herausziehen, heraus-*